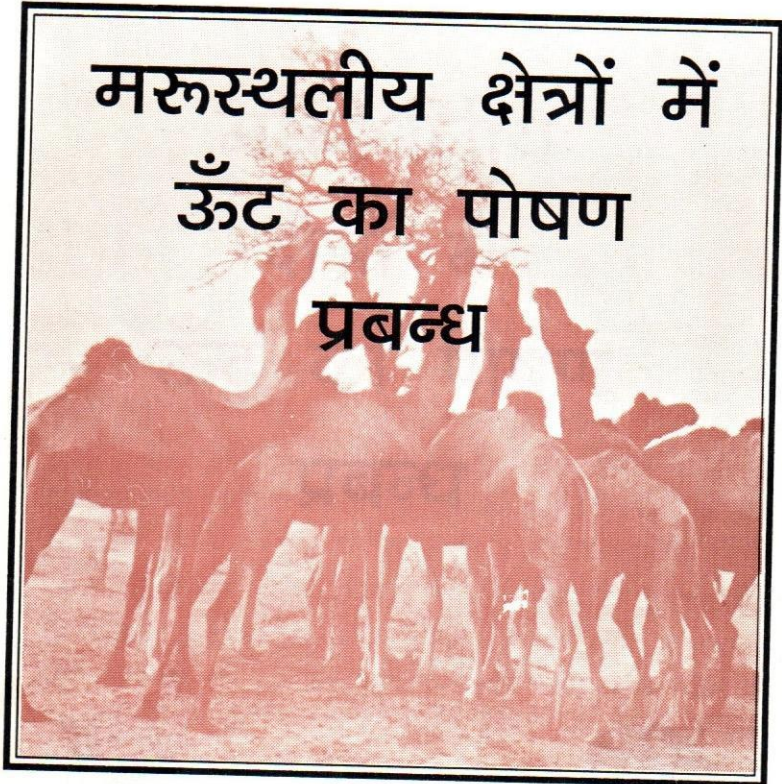




मरुस्थलीय क्षेत्रों में  
ऊँट का पोषण  
प्रबन्ध



राष्ट्रीय उष्ट्र अनुसंधान केन्द्र

पोस्ट बॉक्स नं. 07

बीकानेर-334 001 (राजस्थान)



मरुस्थलीय  
क्षेत्रों में  
ऊँट का पोषण  
प्रबन्ध



राष्ट्रीय उष्ट्र अनुसंधान केन्द्र

पोस्ट बॉक्स नं. 07

बीकानेर-334 001 (राजस्थान)

© राष्ट्रीय उष्ट्र अनुसंधान केन्द्र

प्रकाशक

निदेशक

राष्ट्रीय उष्ट्र अनुसंधान केन्द्र

पोस्ट बॉक्स नं. 07

बीकानेर - 334001 (राज.)

मुद्रक

कल्याणी प्रिण्टर्स

माल गोदाम रोड,

बीकानेर-334001

दूरभाष : 526890

## मरुस्थलीय क्षेत्रों में ऊँट का पोषण प्रबन्ध

रेगिस्तानी क्षेत्रों में आर्थिक दृष्टि एवं रोजमर्रा की दिनचर्या के लिए ऊँट पर निर्भरता अधिक है। इसलिए पशुधन में ऊँट का विशेष स्थान है। ऊँट में रेगिस्तानी पर्यावरण के लिए अनुकूलता सबसे अधिक होती है। ऊँट अकाल में अन्य पशुओं की तुलना में सबसे अधिक समय तक जीवित रहता है तथा अपने शारीरिक भार की 20 प्रतिशत तक की कमी को सहन करने की क्षमता रखता है। जबकि अन्य पशु 12 प्रतिशत की कमी को सहन नहीं कर पाते। अपनी लम्बी गर्दन द्वारा पेड़ों के पत्ते, झाड़ियाँ एवं ऐसी वनस्पति खाता है, जिसे अन्य पशु खाना पसन्द नहीं करते हैं। अतः आहार/पोषण के लिए गाय, भैंस व बकरी का प्रतिद्वन्द्वी भी नहीं है और अपनी चराई की आदत से चरागाह को नष्ट भी नहीं करता है।

ऊँट आहार के लिए चराई पर निर्भर रहता है। साधारणतया चराई के लिए एक ऊँट को 8-10 हैक्टेयर चरागाह भूमि की आवश्यकता होती है। परन्तु बढ़ती जनसंख्या, सिंचित खेती के विस्तार, शहरीकरण एवं औद्योगिकरण द्वारा अधिक से अधिक भूमि मनुष्य द्वारा उपयोग में ली जाने से चरागाह क्षेत्र सिमटते जा रहे हैं। ऐसे में ऊँटों का चरागाह द्वारा पूरा पोषण नहीं हो पाता है। इसी कारण ऊँट-पालक ऊँटों को अर्ध-गहन चराई पर रखने लगे हैं अर्थात् चरागाह चराई के साथ-साथ खूँटे पर भी चारा खिलाने लगे हैं।

अतः ऊँट पालकों के लिए यह आवश्यक हो जाता है कि उन्हें ऊँटों की आयु, उत्पादकता, कार्य के अनुसार पोषण एवं पोषक तत्वों की आवश्यक मात्रा, अकाल में उपलब्ध रेगिस्तानी वनस्पति एवं कृषि उप-उत्पादों व खाद्य के नये स्रोतों के बारे में जानकारी हो, ताकि ऊँट को सस्ता, सुलभ एवं संतुलित आहार मिल सके एवं उसकी उत्पादन और कार्यक्षमता को बढ़ाया जा सके।

तालिका-1 : ऊँट के उपयोग में आने वाली विभिन्न वनस्पतियों का रसायनिक विश्लेषण

क्र. सं.	चारा/दाना	शुष्क मात्रा	अशुद्ध प्रोटीन	वसा	अशुद्ध तन्तु	राख	शर्करा
<b>घास</b>							
1.	ग्रामना	22.8	15.6	4.8	23.2	13.0	43.3
2.	सेवन	30.6	9.4	1.4	33.2	9.4	46.6
3.	धामण	28.0	8.8	2.6	31.0	17.8	39.9
4.	बूर	33.9	7.3	2.8	32.2	7.5	50.4
5.	भुरट	29.3	10.2	2.6	20.2	15.5	51.5
6.	डचाब	46.6	7.7	1.8	30.0	20.5	39.9
<b>फसल</b>							
1.	मोठ चारा	93.5	9.0	2.6	13.0	16.0	59.4
2.	ग्वार फलगटी	93.7	6.8	0.6	28.2	9.4	55.0
3.	चने की खार	93.0	7.7	1.6	24.0	14.2	52.5
<b>झाड़ियाँ या बेलें</b>							
1.	बेकरिया	32.2	12.7	1.6	10.4	22.8	52.4
2.	गोखरू	28.2	19.1	3.1	16.8	15.8	45.3
3.	पाला	53.2	14.3	3.1	18.6	15.2	48.8
4.	बूई	33.9	13.8	1.5	18.5	13.7	52.4
5.	फोग	25.9	10.6	1.6	21.6	9.5	56.6
6.	मुराली काकणी	29.0	23.4	3.48	9.4	15.8	48.0
<b>पेड़</b>							
1.	जाल	30.0	15.8	2.0	8.2	7.5	46.6
2.	खेजड़ी	38.0	12.4	4.6	20.7	20.8	41.5
3.	पारकिन सोनिया	39.1	27.7	4.4	8.5	14.3	45.1
4.	अरडू	30.6	22.6	5.0	16.8	12.0	43.6
5.	नीम	36.0	19.4	3.6	31.6	8.7	54.6
6.	देशी कीकर	50.6	16.0	6.6	7.5	8.2	62.2
7.	सिरस	41.5	30.7	7.0	12.5	5.8	44.0
<b>दाना</b>							
1.	मोठ	94.2	24.3	2.4	5.0	4.6	63.7
2.	ग्वार	90.0	35.2	15.3	12.1	5.9	45.1

रेगिस्तान में पायी जाने वाली विभिन्न वनस्पतियाँ, जो ऊँटों द्वारा आमतौर पर खायी जाती हैं, का रसायनिक विश्लेषण तालिका-1 में दिया गया है। पोषक तत्व घास से ज्यादा क्रमशः फसल के चारे, झाड़ियों और पेड़ों के पत्तों में सबसे ज्यादा होते हैं।

ऊँटों को आहार की आवश्यकता दो तरह से होती है-  
अ. रखरखाव एवं ब. उत्पादन/कार्यक्षमता हेतु:

(अ) रखरखाव आहार :

यह ऊँट को जीवित रखने के लिए व शारीरिक क्रियाओं के लिए आवश्यक होता है।

(ब) उत्पादन/कार्यक्षमता :

उत्पादन/कार्यक्षमता के आधार पर दिया जाने वाला आहार निम्न प्रकार है:

1. शारीरिक वृद्धि आहार :

टोरड़ा/टोरड़ी को दिये जाने वाला यह आहार सबसे महत्वपूर्ण है, क्योंकि इसी पर भविष्य की उत्पादन क्षमता निर्भर करती है। शारीरिक वृद्धि में शरीर की मांसपेशियों, हड्डियों में वृद्धि एवं ऊतकों के निर्माण हेतु पोषक तत्वों की आवश्यकता होती है। अतः इस समय प्रोटीन व खनिज लवण देना बहुत आवश्यक है। इसके लिए ऊँट के बच्चों को दूध के साथ-साथ सूखा/हरा चारा और दाना देना भी आवश्यक है।

जन्म लेने के चार घण्टे के भीतर टोरडियों को माँ का प्रथम दूध (खींस) अवश्य पिलाना चाहिए। खींस में वसा 0.2 प्रतिशत, प्रोटीन 13.0 प्रतिशत, लैक्टोज 2.8 प्रतिशत, राख 0.99 प्रतिशत, विटामिन “बी” और लैक्टोफेरिन्स होते हैं, जो रोगों से सुरक्षा प्रदान करते हैं।

2. ग्याभिन सांडों का आहार :

गर्भावस्था के अन्तिम चार महीने आहार की दृष्टि से महत्वपूर्ण होते हैं। क्योंकि गर्भ में बच्चे की बढ़वार इस समय

तेजी (तीव्र गति) से होती है। ऊँटनी के भार में 600 ग्राम प्रतिदिन की वृद्धि होना आवश्यक है। अतः इस दौरान ऊँटनी को अच्छे मोठ चारे के साथ-साथ दो किलो दाना देना आवश्यक है, जिससे बच्चे व माँ के शारीरिक भार में कमी न हो।

### 3. दूध उत्पादन आहार :

ऊँटनी के दूध में ठोस 11.3 प्रतिशत, वसा 3.8 प्रतिशत, प्रोटीन 2.6 प्रतिशत, लैक्टोज़ 4.1 प्रतिशत, राख 0.8 प्रतिशत, कैल्शियम 0.05 प्रतिशत तथा 0.09 प्रतिशत फास्फोरस होता है। सिर्फ मोठ चारा खिलाने पर 1655 कि. ग्रा. दूध 305 दिनों में प्राप्त किया जा सकता है। दाना देकर दूध उत्पादन को 5.5 कि.ग्रा. प्रतिदिन से ज्यादा बढ़ाया जा सकता है।

### 4. कार्य उत्पादन आहार :

किसी भी कार्य को करने के लिए ऊर्जा की आवश्यकता होती है। जो भोज्य तत्व कार्बोहाइड्रेट, वसा व प्रोटीन द्वारा प्रदान की जाती है। अगर इनकी आपूर्ति खाद्य पोषक तत्वों द्वारा प्रतिदिन नहीं की जाती है तो ऊँट अपने अन्दर संचित शर्करा, वसा व प्रोटीन का उपयोग कर ऊर्जा उत्पन्न करता है, जिससे ऊँट के शारीरिक भार में कमी आ जाती है। दो अथवा चार पहियों वाले गाड़े में 18-20 किंटल भार ढोने वाले ऊँट को मोठ चारे के साथ-साथ एक किलो दाना देने की आवश्यकता होती है।

### 5. ऊँट का आहार :

ऊँट जब झूट में आता है तो खाना-पीना कम कर देता है, जिससे उसके शारीरिक भार में 15-20 प्रतिशत की कमी आ जाती है। ऊँट कमजोर हो जाता है। ऐसी स्थिति में ऊँटों को दाना देना लाभदायक होता है। एक किलो गुड़ और आधा लीटर तिल का तेल देने पर, दो किलो बांटे की अपेक्षा कम शारीरिक कमी देखी गई।

तालिका -2 ऊँट की विभिन्न अवस्थाओं के लिए प्रतिदिन पोषक तत्वों की आवश्यकताएं :

क्र.सं. अवस्था	चारा किरम	देह भार	रोजाना देह वृद्धि	शुष्क मात्रा	पचनीय अशुद्ध प्रोटीन	ऊर्जा मेगा कैलोरी
		कि.ग्रा.	ग्राम	कि.ग्रा.	ग्राम	
1. शासीरिक वृद्धि (दोरडा/दोरडी)	मोठ चारा+दूध ग्वार फलगटी+500 ग्राम	185	300	3.0	240	6.8
2. खाली ऊँटनी	ग्वार दाना	240	550	3.7	230	8.6
3. ग्याभिन ऊँटनी	मोठ चारा	400	275	6.3	300	14.0
4. दुधारू ऊँटनी (5.5 कि.ग्रा. दूध/दिन)	मोठ चारा+2 कि.ग्रा. दाना	600	800	10.0	700	24.0
5. नर ऊँट (क) रखरखाव (ख) ऊँट गाडे खींचना	मोठ चारा	600	-	10.0	550	22.0
6. सवारी ऊँट	मोठ चारा+1 किग्रा दाना	700	-	7.0	400	10.8
7. धावक ऊँट	मोठ चारा	700	-	10.0	500	18.0
	मोठ चारा	650	-	10.0	430	18.0
	मोठ चारा	500	-	8.8	600	24.0



ऊँट की विभिन्न अवस्थाओं के लिए प्रतिदिन पोषक तत्वों की आवश्यकताओं को तालिका-2 में दर्शाया गया है। मोटे तौर पर गर्भकाल के अंतिम चरण में दुधारु पशुओं में, 6-8 घण्टे बोझा ढोने का काम करने वाले ऊँटों को लगभग 25 प्रतिशत अतिरिक्त पोषक तत्वों की आवश्यकता होती है। इसके अतिरिक्त 30-80 ग्राम नमक देना भी आवश्यक है। ऊँट अपने शारीरिक भार का 1.5-2.0 प्रतिशत चारा शुष्क पदार्थ के रूप में ग्रहण करता है। नवम्बर से मार्च तक ऊँट को चरने को कुछ नहीं मिलता। क्योंकि इस समय पेड़ों के पत्ते झड़ने लगते हैं। प्राकृतिक घास-पात सूख जाती है। ऐसे समय में ऊँट को पाला, मोठ चारा व ग्वार फलगटी, चना-खार जैसे सूखे चारे ही मिल पाते हैं। इस समय ऊँट को दाना देना शुरू कर देना चाहिए।

सामान्यतः 450-550 कि.ग्रा. शारीरिक भारवाले ऊँट को 620-700 ग्राम पचनीय अशुद्ध प्रोटीन (डी.सी.पी.) व 5500 से 6500 ग्राम तक कुल पचनीय तत्व (टी.डी.एन.) देना चाहिए। वृद्धि काल में (200-350 कि.ग्रा. भार वाले ऊँट को) 200-470 ग्राम पचनीय अशुद्ध प्रोटीन एवं 2000-3500 ग्राम कुल पचनीय तत्व की आवश्यकता होती है। उपलब्धता एवं लागत को देखते हुए कुछ आहार इस प्रकार हैं:

- |    |                          |       |
|----|--------------------------|-------|
| 1. | मिला-भूसा और ग्वार-फलगटी | 1:1   |
| 2. | मिला-भूसा और मोठ         | 65:35 |

**अकाल की स्थिति में ऊँट का पोषण :**

अकाल में चारे की कमी हो जाती है। ऐसी स्थिति में पशुधन को जीवित रखने के लिए आवश्यक है कि हम उपलब्ध चारे का भरपूर उपयोग करें तथा निम्न कोटि के चारे जैसे तूड़ी को यूरिया उपचार द्वारा अधिक पोषक बनायें। इसके

लिए 10 कि.ग्रा. गुड़, 2 कि.ग्रा. यूरिया व 10 कि.ग्रा. पानी के घोल को 100 कि.ग्रा. चारे के ऊपर छिड़क कर अच्छी तरह मिला लें। इसमें खनिज लवणों व विटामिन की पूर्ति हेतु 2 प्रतिशत खनिज मिश्रण, 1 प्रतिशत नमक और विटामिन ए डी-3 मिश्रण अवश्य मिलावें। इससे उपचारित चारे में नाइट्रोजन की मात्रा बढ़ जाती है जो ऊँट को जीवित रखने के लिए आवश्यक प्रोटीन उपलब्धता के लिए पर्याप्त है। यह ध्यान रखना चाहिए कि उपचारित चारे की मात्रा, आहार में धीरे-धीरे बढ़ानी चाहिए। अकाल में हरा चारा नहीं मिलने की स्थिति में विटामिन “ए” की कमी हो जाती है। अतः विटामिन “ए” का टीका अवश्य लगवायें।

• • •

आलेख  
निर्मला सैनी  
ए. के. नागपाल  
एवं  
गोरख मल

